डा० अमरनाथ झाक मैथिली साहित्य मे देन

मैथिली साहित्य मे डॉ० अमरनाथ झाक योगदान बड़ महत्वपूर्ण अछि। यद्यपि विद्यापति, गोविन्ददास, उमापति वा चन्दा झा प्रभृति लोकनि ललित काव्य रचयिताक श्रेणी मे हिनक परिगणना नहि होएत, हिनक रचना मैथिली भाषामे जे भेटैत अछि से मुख्य रूपें विद्वतापूर्ण, सारगर्भित निबन्ध सभ थिक, तथापि अपन बहुमुखी प्रतिभाक कारण मैथिली भाषाक प्रति लोकरुचि परिष्कृत करबामे हिनक योगदान असाधारण अछि।

एकटा समय छलैक जखन अंग्रेजी पढ़ल-लिखल विद्वान् लोकनिकेँ अपन मातृभाषा मैथिली भरि मूह बजबा मे संकोच होइत रहन्हि, एकटा समय आयल छल जखन हिन्ही भाषा सम्पूर्ण उत्तर भारतक लोकभाषा सभहिक अधिकारकेँ आत्मसात् करबामे लागि गेल छल आओर सुशिक्षित कहोनिहार तकर विरोध करबाक साहस नहि भए रहल छलैक। एहन समय मे डॉ० अमरनाथ बाबू नि:संकोच ओ निर्भीकतापूर्वक मैथिलीक पक्षमे उद्घोष कए शिक्षित मैथिल समुदायक आँखि खोलि देलन्हि। अंग्रेजीक विद्वान् एवं शिक्षक रहितहुं ई सतत् प्रयत्नशील रहैत

छलाह जे मैथिली भाषा बजबाकाल कोनो अन्य भाषाक सम्मिश्रण नहि भए जाए जेना हमरा लोकनि अधिकांश व्यक्ति स्वजातियो सँ वार्त्तालाप करबाक क्रममे बीच-बीचमे अंग्रेजी शब्द वा वाक्यक प्रयोग करैत रहैत छी से हुनकामे एकदम नहि छल। एतयधरि जे स्वरो मे वैजात्य रुचि लए परिलक्षित होइत। तकर प्रभाव ई छल जे हिनका सम्पर्क मे जे कियो व्यक्ति जाइत छलाह तिनका सभकेँ सावधान रहए पड़ैत छल जे मूह सँ 'खिचड़ी' भाषा नहि बहराए। एकर परिणामस्वरूप मैथिली भाषा-भाषीकेँ अपन मातृभाषाक प्रति गौरव भावना दृढ़ होअए लागल तथा ई धारणा नष्ट भए गेल जे बिना अंग्रेजी शब्दक मिझड़ कएने मैथिली भाषा द्वारा भावाभिव्यक्ति नहि कएल जा सकैत अछि।

अबोहर (पंजाब) सम्मेलन मे डॉ० राजेन्द्र प्रसादकें पराजित कए डॉ० अमरनाथ झा हिन्दी साहित्य सम्मेलनक अध्यक्ष निर्वाचित भेल छलाह। एहन गौरवशाली पद पर आसीन भेलो सन्तोँ भाषण इएह कहि आरम्भ कएल जे हिन्दी हमर मातृभाषा नहि थिक। एही सम्मेलनक मंच सँ ई राष्ट्रभाषाक संग-संग मातृभाषा मैथिलीक प्रति आस्था एवं स्नेह अभिव्यक्त कहने छलाह। एहि सँ किछु व्यक्तिकेँ क्षोभ भेल रहन्हि मुदा निर्भीकता, निष्पक्षता एवं मातृभाषाक प्रति कर्त्तव्य परायणताक बोध हिनक भाषण सँ भेल छल आ मैथिलीक स्वतंत्र अस्तित्व कायम भेल छल।

डॉ० अमरनाथ बाबू मैथिली साहित्यक हेतु जे किछु लिखलन्हि से निःस्वार्थ भाव सँ एवं परिपक्व मस्तिष्क सँ आओर जतेक लिखाए देलन्हि से सभ मिलाय मैथिलीक बहुमूल्य निधि थीक।

डा० झा मातृभाषाक माध्यम सँ प्राथमिक शिक्षाक प्रबल पक्षधर छलाह। एहि हेतु ओ १९४१ ई० मे बिहार प्राथमिक शिक्षा सुधार समितिक समक्ष मैथिलीक हेतु कठोर परिश्रम एवं आन्दोलन कएलन्हि।

मिथिला विश्वविद्यालय दिवसक अवसर पर सेहो ई एहि प्रकारक भाव अभिव्यक्त कएलन्हि :--

..... "सबसे बड़ा दोष हमारी शिक्षा प्रणाली में यहाँ है कि हमारे यहाँ के प्रत्येक बच्चों को विदेशी भाषा में शिक्षा मिलती है। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा उनकी मातृभाषा के द्वारा हो। ....."

१९३६ ई० क मैथिली साहित्य परिषद् मे हिनक अध्यक्षीय भाषण बड़ मार्मिक रहल छलन्हि, जाहि सँ मैथिली साहित्यक रूप-रेखा प्रमाणित भेल छल।

ओ कहने छलाह जे मैथिली कोनो जाति विशेषक भाषा नहि थिक जकर प्रमाणार्थ कहलन्हि जे जेना मुसलमानो लोकनि अपन धार्मिक गीत 'तजिया' (दाहा) मे मैथिली गीत गबैत अछि। हिनक ई अन्वेषणक गप्प सूनि बहुतो गोटे क्षुब्ध रहि गेलाह किएक तँ एहि दिशा लोककें ध्यान नहि गेल छलन्हि।

ओना मैथिली साहित्यक सभ अधिवेशन मे डॉ० अमरनाथ बाबू उपस्थित नहि होइत छलाह, मुदा अधिवेशनक कार्यवाही मे बरोबरि सक्रिय योगदान दैत छलाह जाहि सँ हुनक शालीनता एवं कर्मनिष्ठाक परिचय भेटैछ। अपन विचार एवं लेखन सँ मैथिलीक स्वतंत्र सत्ताक रक्षा करबाक सतत् प्रयास करैत छलाह।

मैथिलीक विषय मे अपन धारणा कें स्पष्ट करैत कहने छलाह — "हमर ई तात्पर्य नहि जे मैथिली हिन्दीक स्थान लिअए। हिन्दीकें हम राष्ट्रभाषा मानैत छी। हिन्दीक प्रचार हो हम तकर पक्ष मे छी मुदा हिन्दी हमर मातृभाषा नहि थिक।"

डा० झा मिथिला-मैथिलीक विभिन्न व्यक्ति, संस्था किंवा पत्र-पत्रिका सभकें समय-समय पर अपन संदेश द्वारा जे मार्ग दर्शन एवं उत्साहवर्धन कएलन्हि अछि से हुनक मातृभाषाक उन्नतिक कामनाक परिचायक थीक। वैदेही पत्रिका कें १९५१ ई० में डॉ० झाक सन्देश : —

प्रयाग
२९-३-५१

"वैदेही" मैथिलीक उत्तम सेवा क' रहल अछि।

मातृभाषाक उन्नति के नहि चाहैत अछि। हम आशा राखैत छी जे ई पत्रिका दिन प्रतिदिन उन्नति करत।"

— अमरनाथ झा

एहि संक्षिप्त किन्तु भावपूर्ण सन्देश के देखि मातृभाषाक प्रति हुनक स्नेह एवं श्रद्धाक स्पष्ट परिचय भेट जाइछ। "मातृभाषाक उन्नति के नै चाहैत अछि" -- एहि वाक्य द्वारा जाहि भावनाक अभिव्यक्ति भेल अछि से स्वत: संवेध अछि।

'चौपाड़ि' पत्रिका कें डा० झाक सन्देश —

"मैथिली भाषाक प्रति श्रद्धा ओ स्नेहक अभाव नहि - कलकत्ता, मालदह, काशी, प्रयाग, पटना आदि अनेक स्थान मे मैथिली बजनिहार लोकनिक मातृभाषाक प्रति अनुराग देखि हम अत्यन्त प्रसन्न भेलहुँ। परन्तु केवल स्नेह आओर अनुराग पर्याप्त नहि, केवल उत्साह सँ काज नहि चलत। अपेक्षा अछि कार्ज

के बिहारक और आर्थिक साहाय्यक ग्रन्थ प्रकाशित हो, मासिक पत्रिका प्रकाशित हो, साप्ताहिक समाचार पत्र प्रकाशित हो, लेखक कें पारिश्रमिक प्रदान हो, शुद्ध भाषाक स्वरूप निर्णय हो इत्यादिक आवश्यकता अछि। इहो स्पष्ट कए देब जे हम मैथिलीक सेवाक संगहि राष्ट्रभाषाक सेवो अपन कर्त्तव्य मानैत छी।''

२३-२-५४ — अमरनाथ झा

प्रस्तुत पत्र मे मैथिलीक कतिपय समस्या दिशि, जे एखनहुं वर्तमान अछि, ध्यान आकर्षित कएल गेल अछि। एहि सन्देश द्वारा मैथिलीक सेवक लोकनिकें सशक्त, सक्रिय एवं तीव्र गतिएँ कार्य करबाक प्रेरणा भेटैत अछि।

श्री लक्ष्मीपति सिंहक शब्दें ''हिन्दी मैथिली'' मासिक पत्र ''मैथिल-बन्धु'' कए हुनका सँ जे पथ प्रदर्शन, शुभकामना, ओ आर्थिक सहयोग प्राप्त होइत रहलैक तकरा मैथिल-प्रवासी समाज कहियो नहि बिसरि सकत।

डा० झा प्राय: प्रत्येक उपयुक्त अवसर पर मातृभाषा मैथिलीक प्रति अपन श्रद्धा एवं विचार अवश्य प्रकट करैत छलाह। भागलपुर छात्र-सम्मेलन मे सभापति पद सँ भाषण करैत ओ कहने छलाह : —

"Of the Vernacular in which you are, I hope, deeply interested. I refer to Maithili, We are all proud ..... I should be delighted to see its existence as an independent language and literature and would do all that lies in my power to promote its development and growth ....."

प्रस्तुत भाषण मे ओ स्वयं मैथिलीक वृद्धि एवं विकासक हेतु यथासाध्य कार्य करबाक वचन दैत छथि।

श्री रमाकरजीक अध्यक्षता मे होइत 'मधुबनी शिशु साहित्य परिषद' कें इएह उपदेश देलन्हि जे मैथिलीक उन्नतिक हेतु शिशुलोकनिकें प्रभावित करू, हुनका हेतु साहित्य रचू, हुनके मैथिलीक स्नेहें मैथिलीक उद्धार होएत। ई अत्यन्त दूरदर्शिताक विचार छल। मैथिली बजबाक, मिथिलाक्षर लिखबाक हुनका स्नेहेटा नहि, आग्रह रहैत छलन्हि। जे अमरनाथ बाबू कें मातृभाषाक प्रति बड्ड अनुराग छलन्हि। मैथिलीकें अपन मातृभाषा कहबा मे ई गौरव बुझैत छलाह। मातृभाषाक भण्डार भरबा मे सतत प्रयन्तशील रहैत छलाह। अपना जौं फुरसति नहिओ रहैत छलनि तऽ प्रतिभावान लेखककें प्रेरणा दए कए मातृभाषाक भण्डार समृद्ध करबा मे योगदान दैत छलाह। जेना दीनानाथ झा कें वेकफिल्ड ''पादरी''क एवं डा० जौनसनक

अंग्रेजी उपन्यास 'रसेलस' क मैथिली अनुवाद करबाक प्रेरणा देने रहथिन्ह। एहि बातक पुष्टि रमानाथ बाबू 'रसेलस'क भूमिका मे कएलन्हि अछि ''दीनानाथ बाबू कें स्व० अमरनाथ बाबूक आदेश भेल जे अंग्रेजीक उपन्यास ''रसेलस''क अनुवाद मैथिली मे करू''।

स्व० रमानाथ बाबू आगू लिखैत छथि ''मर्मज्ञ-मनीषी मूर्धन्य डॉ० अमरनाथ बाबूक आदिष्ट कृति सँ मातृभाषाक साहित्य समृद्ध भेल''। एहि पोथी (रसेलस) क अनुवाद करएबाक प्राय: दू गोट उद्देश्य रहल होयतनि, एक त मातृ-भाषाक भण्डार समृद्ध होएत दोसर ई जे एतुका दर्शन एतेक दिन सँ अछि जकर अनुसरण डॉ० जॉनसन सेहो कएने छलाह तकर अनुवाद करबाकऽ ई देखौलन्हि जे हमर सभक दर्शन अपने धरि सीमित नहि, बल्कि देश-विदेश मे एकर अनुसरण कएल गेल अछि।

दोसर प्रतिभावान व्यक्ति जे हिनक प्रेरणा सँ प्रभावित भए मातृभाषाक भण्डार कें समृद्ध कएलन्हि ओ छथि उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास' जी। हिनका सँ ''रूबाइयात-ए-ओमर खैयाम'' क मैथिली मे पद्यानुवाद करबौलन्हि। एहि पोथी में लिखल अछि ''स्व० डा० अमरनाथ बाबूक बड़ इच्छा छलन्हि जे मैथिली मे 'ओमर खैयाम'क पद्यानुवाद होइत। .....''

एकर अतिरिक्त गोविन्द दास (झा) क 'शृंगार भजन' कैं अपने हाथे उतारि कए प्रकाशित करौलन्हि।

'शृंगार-भजनक' भूमिका मे रमानाथ बाबू लिखने छथि — ई गीतावली स्वनामधन्य डॉ० अमरनाथ झा अपना हाथें लीखि साहित्य पत्र मे प्रकाशित करओने छथि।

अमरनाथ बाबूक शब्दें ''१९३६ ई० मे एहि गीतावली कें उतारय लगलहुँ ओ एहि सँ हमरा बड़ आनन्द भेल। हमरा भरोस अछि जे पुस्तकाकार मे प्रकाशित भेला उत्तर एहि सँ कतेको पाठकगण आनन्दित होइत रहताह।''

एहि 'शृंगार-भजनक' भूमिका मे रमानाथ बाबू दोसर ठाम लिखैत छथि :- ''अमरनाथ बाबू सदृश विश्व साहित्यक विलक्षण वेत्ता, सत्साहित्यक मार्मिक अथच कार्यासक्त व्यक्ति स्वान्त: सुखाय एहि गीतावली कैं लिखलन्हि तथा कहैत छथि जे एहि सँ सकल जनक मनोरंजन होयत।''

एहन महान कविक श्रेष्ठ गीतावली कैं एतेक अभिरुचि लए प्रकाशित करब मैथिलीक प्रति हिनक भावनाकैं स्पष्ट करैत अछि।

एकर अतिरिक्त ''हर्षनाथ-काव्य ग्रन्थावली'' ईहो पोथी हिनकैं द्वारा प्रकाशन कराओल गेल। भूमिका मे पं० ऋद्धिनाथ झा लिखने छथि जे — ''विशिष्ट रूपें राखल मैथिली साहित्यक भण्डारक अपूर्व रत्न सभक संग्रह कए पूज्यपादक दौहित्र पंडित श्री अमरनाथ झा द्वारा सभक सोलम्यार्थ प्रकाशन कराओल।''

हिनकैं सँ ''गणनाथ-विन्ध्यनाथ'' पदावली प्रयाग सँ प्रकाशित करबाओल गेल।

एकर अतिरिक्त चन्दा झाक 'महेशवाणी' सेहो सम्पादन कयने छनि। एकर अतिरिक्त भूमिका सेहो किछु ग्रन्थ मे स्वयं लिखने छथि :- यथा -

क) कविशेखर बदरीनाथ झा कृत ''एकावली परिणय''

ख) श्री राम इकबाल सिंह राकेश द्वारा सम्पादित ''मैथिली लोक गीत'' नामक शोध ग्रन्थ आदि।

एकावली परिणयक भूमिका मे डा० झा लिखैत छथि - ''बहुतो भूमिका-लेखक पुस्तक प्रणेता मे अतिशयोक्ति दोषी होइत छथि - जाहि अतिशयोक्तिसं पढ़निहारक मनमे भूमिका लेखक नीर-क्षीर विवेकक योग्यताक प्रति सन्देह उत्पन्न भए जाइत छैक'' एहि पंक्ति सँ समालोचक एवं भूमिका लेखक लोकनिकें स्पष्ट सचेत कएल गेल अछि।

मैथिली भाषा एवं साहित्यक प्राचीनता प्रदर्शित करैत डा० झा एक भूमिका मे लिखने छथि :-

मैथिली भाषा और साहित्य बहुत प्राचीन है ..... ई विशेष द्रष्टव्य थीक श्री राकेश द्वारा सम्पादित ''मैथिली लोक गीत''क भूमिका पृ० ३ - ५ पर।

डा० झा द्वारा रचित सच्चिदानन्द सिंहक संस्मरण एक लघुकाय निबन्ध ''सिन्हा साहेब''क नाम सँ मैथिली गद्य संग्रह'' मे प्रकाशित अछि जाहि सँ छात्र कें ''सिन्हा साहेब'क चारित्रिक विशेषता सँ बड़ सीख भेटैत अछि।

स्व० रमानाथ बाबू संकलित ''मैथिली गद्य-संग्रह मे हिनक प्रवचनक अंश बड़ प्रवाहपूर्ण शैली मे अछि जकर शीर्षक अछि ''अंग्रेजीक साहित्य''

अंग्रेजी साहित्यक प्रकाण्ड विद्वान् रहितहु अपन मातृ-भाषाक प्रति सहज, स्वाभाविक ओ प्रगाढ़ अनुराग रखैत छलाह। हिनक गद्य शैलीक विलक्षणता तँ हिनक रचना कें देखनहि भेटैछ।

डा० झा सतत् मैथिली कविगोष्ठी अथवा अन्य साहित्यिक गोष्ठी मे उपस्थित भए साहित्यकार लोकनिकें प्रोत्साहन देल करथिन्ह। एतबे नहि, ई स्वयं अपना व्यय सँ पुस्तक सेहो प्रकाशित करबा मे सहयोग देथिन्ह। एकर उदाहरण अछि सरसकवि ईशनाथ झाक कविता संग्रह ''माला''क प्रकाशन, जकर प्रकाशनक व्ययभार डा० झा स्वयं उठौने छलाह।

मैथिली साहित्य परिषद्क अधिवेशनक अध्यक्षीय भाषण हिनक मैथिलीक प्रति जागरूक भावनाक द्योतन करैत अछि। डा० झा मैथिलीक अपन लिपि मिथिलाक्षर (तिरहुता)क पूर्ण ज्ञाता छलाह, आ लोककें सिखबाक आग्रह करैत छलाह।

हिनक एकटा आर बड़ पैघ अवदान अछि। ओ ई जे बिहार लोक सेवा आयोग मे मैथिलीक स्थान दियाबए मे हिनके पहिले-पहिल हाथ छन्हि। हिनके 'चेयरमैनशिप' मे मैथिलीक पाठ्य-क्रम बनि गेल छल मुदा १९५५ ई० मे हिनक मृत्यु भए गेला पर बात तर पड़ि गेल। तैं ई एकर अवधारी नहि भए सकलाह। मुदा हिनके कएल-धएल पर काज आगू बढ़ल।

एकर अतिरिक्त पटना विश्वविद्यालय मे मैथिलीक स्वीकृतिक हेतु हिनक अवदान एवं शुभकामना रहलन्हि। कारण सिनेटक सदस्य छलाह महाराज कामेश्वर सिंह हिनके सँ विचारि कए मैथिलीक स्वीकृतिक हेतु प्रस्ताव रखने छलाह।

ओना डा० झा बड़ प्राचीन विचार-धाराक माननिहार एकदम अनुशासित छलाह तैं अपना क्षेत्र सँ बाहरक बात नहि करब, ई धारणा रहैत छलन्हि, तें पृष्ठभूमि मे नाम रहितहु प्रकाश मे नहि अबैत छलाह।

वास्तवमे मिथिला महीमंडलक मन्दार, मैथिली मकरन्दक मधुकर, शेक्सपिअरक काव्यरूपी कमलिनीक भास्कर, साहित्य सीमन्तनीक सिर, कालजयी, स्वनामधन्य, पद्मविभूषण, विद्यामार्तण्ड डा० अमरनाथ बाबूक मैथिली साहित्य मे देन प्रशंसनीय, अनुकरणीय एवं अविस्मरणीय अछि।

-डॉ. वीरेन्द्र झा
पटना विश्वविद्यालय, पटना।